अध्याय पंचम

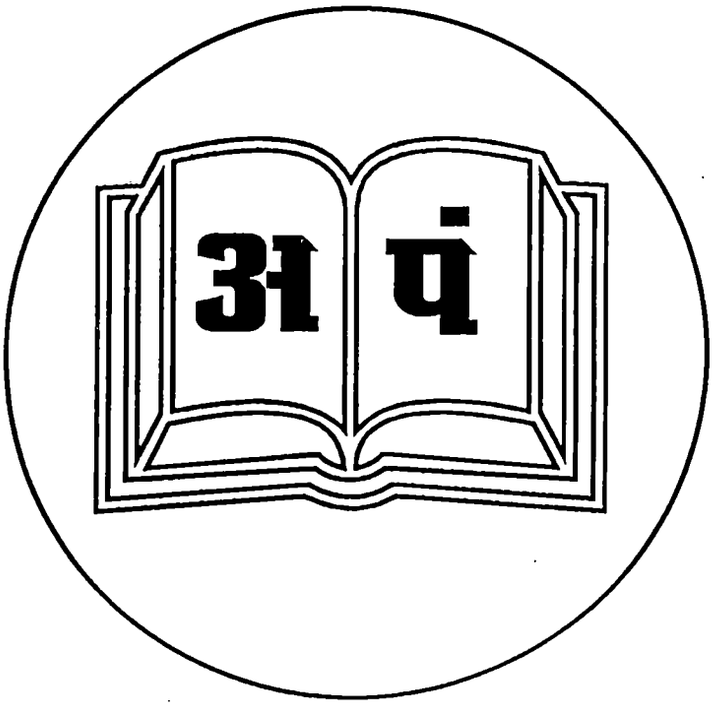

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – पञ्चम

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रारम्भिक मानव समाज अपनी मूल क्षुधाओं की तृप्ति हेतु स्वयं जिम्मेदार था और उसका सारा कार्य मूल आवश्यकताओं की पूर्ति में ही निहित था । शिक्षा ने उसे एक सामाजिक प्राणी के रूप में स्थापित किया । आधुनिक युग के समाज की विषम जटिलताओं के साथ – साथ श्रम विभाजन की आवश्यकता विकसित किया । सामाजिक जटिलताओं और श्रम विभाजन की आवश्यकता ने शिक्षा के सम्पूर्ण परिवेश को प्रभावित किया । इसके उद्देश्यों में परिवर्तन आया, शिक्षण विधि और पाठ्यक्रम का स्वरूप परिवर्तित हुआ और शिक्षा, व्यक्ति, देश और समाज के विकास के लिए अपरिहार्य एवं सशक्त बन गयी । किसी राष्ट्र के उत्थान और पतन में शिक्षा की भूमिका और महत्वपूर्ण हो गयी और इस शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक की भूमिका केन्द्रित हो गयी । इसलिए किसी भी राष्ट्र का भविष्य शिक्षक के ज्ञान पर ही नहीं, अपितु उसके सद्गुण, उसकी अभिवृत्ति एवं उसके आदर्शों पर आश्रित है ।

प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान शिक्षा और समाज में बना रहा है । प्राचीन काल में शिक्षक को ईश्वर सदृश माना जाता था । वर्तमान जटिल और तकनीकी रूप से यद्यपि की अध्यापक की कार्य प्रणाली में व्यापक परिवर्तन आया है, फिर भी आज जनतंत्रीय व्यवस्था में उसे "राष्ट्र निर्माता" व "मार्ग-दर्शक" की संज्ञा से सुशोभित किया जाता है । फ्रोवेल ने शिक्षक को उस माली के समान माना है, जो बालक रूपी पौधों के सौन्दर्य में वृद्धि करता है ।

आधुनिक युग में भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में शिक्षण को एक उदात्त व्यवसाय के रूप में माना जाने लगा है । सम्पूर्ण विश्व की श्रेष्ठतम् विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया है ।

समस्त युगों के समस्त धार्मिक नेताओं व समाज सुधारकों ने इस व्यवसाय का अधिग्रहण करके उसकी गरिमा को विकसित किया है । बुद्ध, ईसा, सुकरात, मुहम्मद, कनफ्यूशियस आदि सभी ने मानव-जाति को शिक्षित किया है, सच्चे अर्थ में ये सभी शिक्षक थे ।

आज का शिक्षक भी इन महात्माओं के चरण चिन्हों का अनुगमन करके अपने देश, समाज व राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं, परन्तु कई अपरिहार्य कारणों से आज का शिक्षक इन आदर्शों की ओर ध्यान नहीं दे पा रहा है । आज के बदलते हुए सामाजिक परिवेश में प्रतिभावान छात्र सर्वप्रथम डाक्टर, इन्जीनियर व

प्रशासन सम्बन्धी व्यवसाय में रूचि लेता है, इन क्षेत्रों में असफल होने पर विवशतावश वह शिक्षण व्यवसाय में आना चाहता है । इसका मूल कारण यह है कि इसे समाज में अन्य व्यवसायों के समकक्ष नहीं देखा जाता है । अध्यापक को समाज में उचित स्थान नहीं प्राप्त है और एक शिक्षक के अभाव में बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं हो पाता है । अतः अध्यापक के महत्व की अपेक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि अध्यापक का व्यक्तित्व उसकी शिक्षण विधि, शिक्षा के प्रति उसकी अभिवृत्ति, विद्यार्थी के ऊपर प्रभाव तो डालती ही है, साथ ही छात्र को सीखने की इच्छा को भी प्रभावित करती है । अध्यापक छात्र को दिशा प्रदान कर समाज की दिशा का निर्धारण करता है ।

शिक्षा प्रक्रिया, शिक्षक, छात्र, समाज, पाठ्यक्रम तथा संस्कृति सबसे प्रभावित होती है, परन्तु शिक्षक, शिक्षार्थी एवं सामाजिक परिवेश उस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं । शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों ही समाज के अंग हैं । दोनों पर ही समाज की परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है । शिक्षा के उद्देश्यों एवं शिक्षक की भूमिका का निर्धारण समाज ही करता है । जिस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता होती है तथा जिस प्रकार के अध्यापक की वह कल्पना करता है, उसका उसकी भूमिका सम्पादन में महत्वपूर्ण योगदान होता है ।

आज का समाज नित्य परिवर्तित हो रहा है, ज्ञान का अथाह भण्डार नित्य संग्रहीत होता जा रहा है । व्यक्ति नवीन परिस्थितियों को आत्मसात् करने की प्रक्रिया में

लगा हुआ है । नवीन तकनीकी एवं ज्ञान के प्रसार ने शिक्षा प्रक्रिया का विश्लेषण करना आरम्भ किया । शिक्षा प्रक्रिया में सीखने वाले और सिखाने वाले दोनों की अन्त:क्रिया का विश्लेषण आरम्भ हुआ । आधुनिक शिक्षक, शिक्षण की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए अनेक वैज्ञानिक विधियों और उपकरणों का प्रयोग कर सकता है, जिसकी कल्पना आज से कुछ वर्षों पहले की नहीं जा सकती थी । शिक्षक मानदण्ड को उच्च करने के लिए प्राथमिक विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों की उच्चतम् कक्षाओं तक शिक्षण तकनीकियों एवं उपकरणों आदि के उपयोग करने का प्रयास किया जा रहा है ।

परम्परागत शिक्षण पद्धति एवं वर्तमान शिक्षण–शैलियों में बहुत अन्तर आ चुका है । प्राचीन काल में शिक्षक विषय वस्तु का छात्रों के सम्मुख मौलिक रूप से प्रस्तुत करना था । शिक्षण की सफलता उसके श्रुति ज्ञान की प्रगाढ़ता और व्यवस्था करने की क्षमता पर निर्भर करती थी । आज की शिक्षण तकनीकी भी अत्यन्त परिमार्जित एवं परिष्कृत हो गयी । आज के शिक्षक को अपने विषय का ज्ञाता और व्याख्याता होने के साथ – साथ यह भी जानना आवश्यक होता है कि वह शैक्षणिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पठनीय विषय–वस्तु का विन्यास और संगठन कुछ इस प्रकार से करें कि विविध शिक्षण सामग्रियों एवं शिक्षण के विभिन्न उपागमों, विधियों तथा माध्यमों का किसी विशेष विषय तथा स्तर के लिए सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जाय तथा उपलब्ध शैक्षणिक साधनों, जैसे —— चलचित्र, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि को कब और कैसे किस मात्रा में प्रयुक्त किया जाय ? साथ ही आज के अध्यापक को अपने आपको इसके

लिए भी तैयार करना होगा । अध्यापक को समाज, सामाजिक मांग, आवश्यकता और सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप अपने आपको बनाना होगा ।

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में शिक्षक एक "एजेन्ट" के रूप में कार्य करता है । इसके परिपेक्ष्य में शिक्षक की भूमिका उत्तरदायीपूर्ण होनी ही चाहिए । साथ ही सामाजिक परिवर्तन को स्थापित करने में भी अध्यापक को उचित दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए । शिक्षक को छात्रों के व्यवहारों का परिमार्जन कर उन्हें आने वाले समाज के अनुरूप बनाना होता है । इसके लिए उनमें विशेष प्रकार की मनोवृत्ति होनी चाहिए तथा विशेष प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए । शिक्षक से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह कैसे अभिभावकों को जो अशिक्षित हैं, उन्हें ज्ञान के माध्यम से सामाजिक विषय का ज्ञान करायें । तभी वे भविष्य के समाज के अनुरूप अपने छात्रों को तैयार कर सकेगें । इन परिस्थितियों के लिए जहाँ एक तरफ अध्यापक को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, वहीं दूसरी तरफ इसके लिए उसके अन्दर महत्वाकांक्षा भी होनी चाहिए ।

<u>शिक्षा में नवाचार की आवश्वयकता</u> :

समाज की प्रगति में हमेशा दिशा का उद्‌बोधन रखता है । ज्ञान, विज्ञान एवं संस्कृति के विकास ने अनेकानेक मानव उपभोग की वस्तुओं का निर्माण किया है । जिनमें से कई वस्तुओं के स्थान विशेष के लोग अनभिज्ञ होते हैं तथा इन वस्तुओं के प्रति

उनमें से कुछ ही लोगों की जिज्ञासा जागृत होती है, कोई भी ऐसा विचार, वस्तु अथवा प्रक्रिया, जिसे व्यक्ति विशेष एक नयी चीज के रूप में देखता है और अनुभव करता है, वह **नवाचार** कहलाता है । अतः नवाचार किसी भी क्षेत्र में किसी भी वस्तु, प्रक्रिया अथवा सिद्धान्त को नये के रूप में देखना तथा प्रयोग में लाना है । नवाचार का अभिप्राय किसी वस्तु विचार अथवा सिद्धान्त में परिवर्तन से भी लिया जाता है । आक्सफोर्ड डिक्सनरी के अनुसार नवाचार का अर्थ किसी नवीनता को लागू करने, किसी स्थापित वस्तु में परिवर्तन लाने अथवा एक नवीन प्रयास द्वारा स्थपित विधियों में परिवर्तन लाने को कहा गया है । वास्तव में नवाचार शब्द का प्रयोग कृषि, औषधि और विज्ञान के क्षेत्र में सर्वप्रथम लागू किया गया ।

और तत्पश्चात् 1964 में सर्वप्रथम शिक्षा के क्षेत्र में इसका उपयोग किया गया । **माइल्स** ने 1964 में नवाचार को परिभाषित करते हुए कहा है कि नवाचार किसी व्यवस्था के लक्ष्यों को प्रभावोत्पादकता में विकास के लिए सुविचारित नवीन और विशिष्ट परिवर्तन है । किसी वस्तु विचार अथवा सिद्धान्त के नवीनता का निर्धारण इस बात पर निर्भर करता है कि वह उस क्षेत्र विशेष के रहने वाले लोगों के लिए कितनी नवीन है । अतः यह कहा जा सकता है कि नवाचार और नवाचारिकता उस स्थान विशेष अथवा समूह के लोगों के परिप्रेक्ष्य में निर्धारित होती है, अतः कोई भी सिद्धान्त वस्तु अथवा विचार किसी एक क्षेत्र विशेष के लिए नवाचार हो सकता है परन्तु दूसरे क्षेत्र के लोगों की परम्परा का एक आवश्यक अंग बन चुका होता है, जैसे —— शिक्षा के क्षेत्र में

कम्प्यूटर भारतीय विद्यालयों के लिए एक नवाचार है, परन्तु पश्चिम के विकसित देशों के लिए शिक्षा के लिए एक आवश्यक सामग्री अथवा उपकरण है ।

वास्तव में वैचारिक रूप से नवाचार एक विचार मात्र न होकर विचारों का एक समुच्चय है क्योंकि जब भी एक नवाचार किसी भी समाज में उत्पन्न होता है तो वह एक अकेली वस्तु अथवा विचार न होकर एक, दो चार तत्वों का संगठन होता है । जो पहले से ही समाज में विद्यमान होते हैं । नवाचार को एकदम से नूतन मानना उचित नहीं है बल्कि यह नूतन और पुरातनता का एक ऐसा योग है, जो एक नवीन इकाई के रूप में कुछ नवीन विशेषताओं के साथ उपस्थित होता है । अतः परम्परागत विधि तौर तरीके या सामग्री में सुधार की प्रक्रिया को भी नवाचार माना जा सकता है ।

समाज विशेष में परिवर्तन घटित होने के उपरान्त सामाजिक परिस्थिति से उचित समायोजन स्थापित करने के लिए निर्धारित क्रियाओं, वस्तुओं, सिद्धान्तों में परिवर्तन लाना आवश्यक हो जाता है । अतः इन सुधारात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नवाचारिक एक सृजनात्मक चयन है । जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने उद्देश्यों में सुधार लाकर अब स्वयं अपने आप को और अपने संगठन को समाज के नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप बनाता है । जो कि भविष्य में उसके समायोजन और विकास के निर्धारण में सहयोग प्रदान करते हैं ।

यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि किसी समाज अथवा संस्था के लिए नवाचारिक व्यक्तियों की क्या आवश्यकता होती है ? वास्तव में नवाचारों के माध्यम से संस्कृति में उत्पन्न हो रहे विषमताओं का समाधान ढूँढा जा सकता है, क्योंकि नवाचारों के माध्यम से उस परिस्थिति पर नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है । जिस परिस्थिति में परम्परागत सिद्धान्त, प्रक्रिया अथवा वस्तु असहाय हो जाती है, इसके माध्यम से अध्यापक की सम्पूर्ण शैक्षिक शक्ति का उपयोग किया जा सकता है और शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है तथा विभिन्न शैक्षिक समस्याओं के समाधानों के लिए उनकी सहायता ली जा सकती है । शिक्षा के विकास की प्रक्रिया में नवाचार वह प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत नवीन आविष्कारों का ज्ञान वस्तु माध्यम अथवा सिद्धान्त के आधार पर शिक्षा के नवीन स्वरूप प्रदान किया जा सकता है । इसके लिए यह आवश्यक नहीं कि नवाचारों का विकास अपने ही समाज में हुआ है । वास्तव में नवाचार का तात्पर्य ही यही होता है --- "वह वस्तु अथवा सिद्धान्त जो उस समाज के लिए नये हों" अतः इन्हें कहीं से भी आयातीत किया जा सकता है ।

संचार एवं यातायात के साधनों के विकास के परिणामस्वरूप दूसरे देशों में उत्पादित तथा विकसित नवाचारों का ज्ञान तत्काल ही विभिन्न समाजों में प्रचारित एवं प्रसारित हो जाता है । हमारा समाज भी तीव्रता से परिवर्तित हो रहा है । अतः यदि शिक्षा के परम्परागत उद्देश्यों में परिवर्तन लाना है तो शैक्षिक नवाचारों का उपयोग करना ही होगा । शैक्षिक नवाचारों का अन्धानुकरण मात्र ही पर्याप्त न होगा बल्कि नवाचारों का

अपनी शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में मूल्यांकन कर ही इसे अंगीकार करना होगा । शैक्षिक नवाचारों को अंगीकार करने के लिए निम्न पाँच पदों की आवश्यकता होती है ।

नवाचारों का ज्ञान होना :

इस स्तर पर व्यक्ति को नवाचारों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक होता है । नवाचार के बारे में व्यक्ति विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त करता है ।

रुचि उत्पन्न होना :

नवाचारों का ज्ञान व्यक्ति में वस्तु के प्रति रुचि जागृत करती है और मनोवैज्ञानिक रूप से व्यक्ति उससे और अधिक जुड़ जाता है ।

मूल्यांकन स्तर :

इस अवसर पर व्यक्ति नवाचार का मानसिक रूप से मूल्यांकन कर यह तय करता है कि इसे स्वीकार किया जाय अथवा नहीं ।

प्रयास का स्तर :

मूल्यांकन करने के बाद व्यक्ति नवाचारों को लघु स्तर पर क्रियान्वित कर उसके प्रभाव का अध्ययन करता है और भविष्य के लिए इसकी उपयोगिता पर विचार करता है ।

अंगीकार का स्तर :

इस स्तर पर व्यक्ति नवाचारों का उपयोग में लाने का निर्णय कर लेता है।

नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापक :

समय के अनुसार अपने को समकालीन बनाना नवाचारिकता है । दूसरे शब्दों में नवाचारिकता का अभिप्राय नवाचारों को अंगीकार करने की प्रवृत्ति से है, जो व्यक्ति अपने समूह के अन्य व्यक्तियों की तुलना में नवाचारों को यथाशीघ्र अधिग्रहण कर लेता है, उसे नवाचारिक व्यक्ति कहा जाता है और जो व्यक्ति इन्हें सबसे अन्त में अपनाने के लिए बाध्य होते हैं, उन्हें अनवाचारिक व्यक्ति कहा जाता है । ये व्यक्ति रूढ़िवादी हैं जो पुरानी लीग पर चलना पसन्द करते हैं ।

इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को अपने अन्य शिक्षक साथियों की तुलना में सर्वप्रथम अपनाने वाले अध्यापक को नवाचारिक अध्यापक कहा जाता है । इससे शब्दों में नवाचारिक अध्यापक वह अध्यापक है जो शिक्षण की व्यूह रचना के क्षेत्र में नये विचारों को पहचानने और उनके उपयोग में रुचि रखता है तथा सर्वप्रथम उनका प्रयोग करता है । इन अध्यापकों से यह अपेक्षी की जाती है कि वे शिक्षा की नवीन विचार-धाराओं वस्तुपरक सामग्री वैयक्तिक शिक्षण और संस्थानों के संगठन सम्बन्धी नवीन विचारों को समझते हैं तथा उन पर विचार व्यक्त करने के लिए तैयार रहते हैं । इनका परम्परावादी विचारधारा में कोई विश्वास नहीं होता है । ये सदैव व्यवस्था के विकास के लिए चिन्तित रहते हैं । ये बहुधा बहुमुखी व्यक्तित्व वाले होते हैं । (शुक्ला – 1984) शिक्षा के क्षेत्र

में नवीनतम प्रयोगों को करने की इनमें शक्ति होती है । इनमें कल्पनाशीलता और साहस की बहुलता होती है । (जिसन और विलियम – 1971) में दूसरों का मार्ग–दर्शन करते हैं, इनके पास अनुभव और ज्ञान की बहुलता होती है और शिक्षा के अन्दर होने वाले नवीन प्रयोगों, जानकारियों तथा प्रवृत्तियों का उन्हें ज्ञान होता है ।

महत्वाकांक्षा का स्तर :

व्यक्ति के महत्वाकांक्षा के स्तर का प्रभाव उसकी भूमिका के निष्पादन पर पड़ता है । यह कहा जा सकता है कि अध्यापक के महत्वाकांक्षा के स्तर पर प्रभाव कक्षा में उसकी भूमिकाओं के निर्वाह को भी प्रभावित करता होगा । इसी प्रकार महत्वाकांक्षा के स्तर पर व्यक्ति के व्यावसायिक रुचियों से भी होता है और एक उचित स्तर की महत्वाकांक्षा व्यक्ति को आशावादी बनाती है । अत: प्रस्तुत अध्ययन में नवाचारिक अध्यापक के महत्वाकांक्षा के स्तर का भी अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।

जिस प्रकार संसार में कोई भी व्यक्ति जीवन–दर्शन और जीवन लक्ष्य से हीन नहीं होता, उसी प्रकार हर एक व्यक्ति अनेक आकांक्षा भी रखता है । आकांक्षायें सम्पूर्ण जनमानस में एक जैसी नहीं होती है । कोई सुख शान्ति से रहना चाहता है, कोई विशाल सम्पत्ति का मालिक बनना चाहता है । कुछ की आकांक्षा इतनी होती है कि उसको दोनों समय पेट भर खाना और तन ढाँकने के लिए कपड़ा मिलता रहे तो दूसरा और कोई कोठी कार से भी सन्तुष्ट नहीं हो पाता, केवल भौतिक उत्पादनों को लेकर ही आकांक्षाओं के स्तर भिन्न नहीं होते । अन्य क्षेत्रों में भिन्न – भिन्न स्तर की आकांक्षाएँ

देखी जा सकती है । उदाहरण स्वरूप धार्मिक तो बहुत से लोग रहते हैं परन्तु धार्मिक आकांक्षाएँ सबमें नहीं होती, अधिकतर लोग समय असमय थोड़ा बहुत पूजा–पाठ करके अथवा धार्मिक विधि विधान में सम्मिलित होकर धर्म से छुट्टी पा जाते हैं, परन्तु कुछ लोगों के लिए धर्म का प्रचार और अपना आध्यात्मिक विकास ही सबसे अधिक तीव्र आकांक्षा बन जाता है । इसी प्रकार लेखक, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, समाज–सुधारक, नेता, अध्यापक आदि सभी की भिन्न–भिन्न आकांक्षाएँ होती है, जो दूसरों को दिखायी नहीं देती है ।

<u>सृजनात्मकता</u> :

सृजनशीलता न्यूनाधिक प्रत्येक प्राणी में पायी जाती है, वस्तुतः जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विकास तथा प्रगति सृजनशीलता के ही परिणाम हैं, जो मानवीय कल्पना पर आधारित है । अतः यह जानना आवश्यक हो गया है कि कल्पना क्या है ? कल्पना वह चेतन मानसिक प्रक्रिया है जो प्रतिभा के आधार पर नवीनता का निर्माण करती है । जिसका सम्बन्ध किसी कला विशेष से नहीं होता । यह सम्वेदन प्रत्यक्षीकरण और स्मृति पर आधारित होते हुए भी एक स्वतंत्र क्रिया है । कल्पना प्रायः उन्हीं वस्तुओं की होती है, जिन्हें पहले देख चुके हैं । जैसा कि वुड वर्थ ने लिखा है कि हवामहल की कल्पना में उसका निर्माण सदा पृथ्वी पर पायी जाने वाली ईटों से होता है । भले ही वह पृथ्वी पर बने अब तक किसी महल से न मिलता हो । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कल्पना किसी वस्तु की अनुपस्थिति में उसका नवीन रूप में मानसिक चित्रण है । अतः

कल्पना ही सृजनशीलता को नया आयाम प्रदान करती है । इस आयाम के कारण ही दिनोंदिन समाज में परिवर्तन हो रहे हैं । ये परिवर्तन मानव के नवीन परिस्थितियों में समायोजन के लिए विवश कर रहे हैं । इस विवशता के कारण ही समाज में नित्य नये परिवर्तन हो रहे हैं । इन परिवर्तनों की पूर्ति न होने पर उनमें क्षोभ, कुत्सा, कुण्ठा, सामाजिक दुर्व्यवस्था आदि उत्पन्न हो जाते हैं और मानसिक रूप से उन्हें आघात पहुंचता है । जिसके परिणाम स्वरूप मुक्ति प्राप्ति हेतु सृजन आवश्यक हो जाता है । लगभग 30 वर्ष पहले सृजनशीलता शब्द का प्रार्दुभाव हुआ । मानव को प्रकृति द्वारा कुछ अर्न्तनिहित शक्तियाँ प्राप्त हैं, इनमें से सृजनशीलता सर्वाधिक प्रमुख और अद्वितीय हैं । वर्तमान में अनेक क्षेत्रों में इसका विकास किया जा रहा है । यह उतना अन्वेषित नहीं हो पाया है, जितना कि वृद्धि और व्यक्तित्व । सृजनशीलता किसी–न–किसी रूप में उत्पादन या नवीन रचना से सम्बन्धित है । यह उत्पादन मूर्त या अमूर्त किसी भी रूप में हो सकता है । विज्ञान, कला; तकनीकी, शिल्प आदि के क्षेत्रों में सृजनशील उत्पादन का रूप मूर्त होता है । जबकि साहित्यिक रचनाओं आध्यात्म आदि के क्षेत्र में इसका रूप अमूर्त होता है ।

वर्तमान जटिल होता हुआ समाज तथा विविध रूप से उत्सुक होते विश्वं में सृजनशीलता के महत्व और स्वरूप में परिवर्तन कर दिया । जैसा कि **वैरन** ने भी इसी ओर संकेत करते हुए कहा है कि ––– "इतिहास में सम्भवतः कभी भी सृजनशीलता को इतने अच्छे स्तर पर नहीं पहिचाना गया, जितना कि आज ।" आज विज्ञान ने जो कुछ भी हमें प्रदान किया है, उसके पीछे सृजनशील चिन्तन और नये आयाम ही रहे हैं ।

यदि देखा जाय तो आज का कलाकार, शिल्पी, अभियन्ता, डाक्टर, लेखक, कवि, वैज्ञानिक तकनीशियन आदि चुनौती भरे वातावरण में साँस ले रहे हैं । कारण यह है कि उन्हें मौलिक और नये आविष्कार चाहिए एवं यही मौलिक तथा नवीन आविष्कार सृजनशीलता के अर्न्तनिहित एवं अर्न्तभूत शक्तियों का परिणाम है । आज के लेखकों में अपने अमूर्त सृजन में ऐसे–ऐसे नवीन प्रयोग किये हैं कि उनका पाठक सहज ही अपने मानस पटल पर सृजन की अमिट छाप पड़ा पाता है और नये – नये ढंगों से सोचने के लिए विवश किया है ।

<u>अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व</u> :

वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में परिवर्तन आज की प्रमुख आवश्यकता है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही आधुनिक समाज को प्रबल बनाया जा सकता है और समाज के नवीन तथ्यों का निर्धारण किया जा सकता है । इस प्रकार शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए हमें इससे सम्बन्धित समस्याओं को समझना होगा और इन समस्याओं के समाधान के लिए कुछ व्यूह रचना और प्राप्त स्रोतों का विकास करना होगा । यह एक आम धारणा बन गया है कि हमारे विद्यालयों में दकियानूसी विचार प्रबल होते जा रहे हैं और हमारी शिक्षा व्यवस्था शैक्षणिक अकार्यकुशलता कठोर पाठ्यक्रम अनुप्रयोग परीक्षा पद्धति और अकाल्पनिक प्रशासन से बंधी हुई है । यही कारण है कि हमारे देश में बहुत से अध्यापक नवीन विचार–धारा को नहीं अपनाते हैं । यदि एक उचित और पुष्टि कारक वातारण अध्यापकों को प्राप्त हो सके तो निश्चय ही वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अभूतपूर्व सुधार सम्भव हो सकेगा और शिक्षा व्यवस्था में नवाचारों एवं नवाचारिक प्रवृत्तियों का विकास सम्भव हो सकेगा ।

अध्यापक के व्यवहार को उसकी अभिवृत्ति प्रभावित करती है । निश्चय ही यदि अध्यापक की अभिवृत्ति उसके व्यवसाय के प्रति धनात्मक होगी तो वह व्यवसाय में रुचि लेता रहेगा और नवीन समाज की संरचना में मदद करेगा । आज इस बात की आवश्यकता है कि नवाचारिक अध्यापकों को पहिचाना जाय, उन्हें प्रोत्साहित किया जाय । साथ ही अनवाचारिक अध्यापकों को पुनः प्रशिक्षित कर उनमें नवाचारिकता का विकास किया जाय । क्योंकि यह पाया गया है कि प्रशिक्षण से नवाचारिकता का विकास होता है । (मार्ट – 1964)

नवाचारिक अध्यापक अपने व्यक्तित्व ज्ञान कार्य पद्धति तथा सोचने विचारने के ढंग में अनवाचारिक अध्यापक से भिन्न होता है और उसको महत्वाकांक्षा स्तर द्वारा उसकी भूमिकाओं के निष्पादन पर प्रभाव पड़ता है । अतः यह जानना आवश्यक प्रतीत होता है कि नवाचारिक व अनवाचारिक अध्यापकों के महत्वाकांक्षा के स्तर में किस प्रकार का सम्बन्ध है और किस प्रकार से प्राप्त ज्ञान का अध्यापक के चयन एवं प्रशिक्षण में उपयोग किया जा सकता है ।

<u>समस्या का अभिकथन</u> :

प्रस्तुत अध्ययन नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों के महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मकता से सम्बन्धित है । समस्या का कथन इस प्रकार है ---

"पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय के नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों के महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन ।"

पारिभाषक शब्द :

पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय उ0प्र0 उच्च शिक्षा अधिनियम के अन्तर्गत स्थापित विश्वविद्यालय जो जौनपुर जनपद मुख्यालय पर स्थित है तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के 10 जनपदों --- जौनपुर, वाराणसी, भदोही, मिर्जापुर, इलाहाबाद, सोनभद्र, आजमगढ़, बलिया, मऊ, गाजीपुर के महाविद्यालय इससे सम्बद्ध हैं ।

नवाचारिक अध्यापक :

नवाचारिक अध्यापक वह अध्यापक है, जो अपने विद्यालय के सहयोगी अध्यापकों की तुलना में नवाचारिक प्रवृत्तियों को, जैसे --- नयी शिक्षा पद्धति, नये विचार, नये अन्वेषण आदि को सर्वप्रथम अपनाता है । इस अध्ययन में नवाचारिक अध्यापक वह अध्यापक है, जो समाजमीतिय प्रश्नावलियों में सबसे अधिक अंक अर्जित करता है ।

अनवाचारिक अध्यापक :

अनवाचारिक अध्यापक वह अध्यापक है जो शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारिक प्रवृत्तियों को तब अपनाता है, जब वे या तो व्यवस्था के आवश्यक अंग बन जाते हैं अथवा परम्परा बन जाते हैं । इस अध्ययन में अनवाचारिक अध्यापक वह है जो समाजमितीय

प्रश्नावलियों में सबसे कम अंक अर्जित करता है ।

महत्वाकांक्षा स्तर :

किसी व्यक्ति द्वारा भविष्य में किसी भिज्ञ कार्य के निष्पादन के स्तर से प्रदर्शित होता है । जिसे वह अपने विगत अनुभवों के आधार पर प्राप्त कर लेने का अनुमान लगाता है ।

एक कार्य में निष्पादन का स्तर जानने के पश्चात् जब कोई व्यक्ति अपने अगले भावी प्रयास में निष्पादन स्तर तक पहुंचने की प्रत्याशा करता है तो उसे उसका आकांक्षा स्तर कहते हैं ।

सृजनात्मकता :

स्टेग्नर और कार्वोस्की के अनुसार, "सृजनात्मकता का तात्पर्य सम्पूर्ण या आंशिक अभिनव उत्पादन या परिवर्तन से है ।"

ड्रेवडह्ल के अनुसार, "सृजनात्मकता व्यक्ति की वह शक्ति है, जो नये विचारों व उत्पादन को जन्म देती है, जो उसे पहले से अज्ञात रहता है ।

स्पीयरमैन के अनुसार, "सृजनात्मकता मानव मस्तिष्क की वह शक्ति है जो सम्बन्धों के स्थानान्तरण के द्वारा नये विषय पहलुओं का निर्माण करता है, जिससे अभिनव-उत्पाद विकसित होते हैं ।"

शोध के उद्देश्य :

(1) पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयीय अध्यापकों में से नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों का पता लगाना, पहचान करना ।

(2) लिंग भेद के अनुसार नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों में महत्वाकांक्षा स्तर पर तुलनात्मक अध्यन करना ।

(3) लिंग भेद के अनुसार नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों में महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मकता के बीच तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(4) लिंग भेद के अनुसार नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(5) आवास गत भेद के अनुसार नवाचारिक एव अनवाचारिक अध्यापकों में महत्वाकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(6) आवासगत भेद के अनुसार नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों में सृजनात्मकता की प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(7) आवासगत भेद के अनुसार नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों को महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मकता के बीच तुलनात्मक अध्ययन करना ।

शोध की परिकल्पनायें :

उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शोध–परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया ---

1. नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों के महत्वाकांक्षा स्तर में भिन्नता होगी ।
2. नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों की सृजनातमकता में भिन्नता होगी ।
3. नवाचारिक अध्यापकों की महत्वाकांखा स्तर में लिंग के आधार पर भिन्नता होगी ।
4. अनवाचारिक अध्यापकों की महत्वाकांक्षा स्तर में लिंग के आधार पर भिन्नता होगी ।
5. नवाचारिक अध्यापकों की महत्वाकांक्षा स्तर में आवास के आधार पर भिन्नता होगी ।
6. अनवाचारिक अध्यापकों की महत्वाकांक्षा स्तर में आवास के आधार पर भिन्नता होगी ।
7. नवाचारिक अध्यापकों की सृजनात्मकता में लिंग के आधार पर भिन्नता होगी ।
8. अनवाचारिक अध्यापकों की सृजनात्मकता में लिंग के आधार पर भिन्नता होगी ।
9. नवाचारिक अध्यापकों की सृजनात्मकता में आवास के आधार पर भिन्नता होगी ।
10. अनवाचारिक अध्यापकों की सृजनात्मकता में आवास के आधार पर भिन्नता होगी ।

प्रासंगिक शोध कार्यों का सर्वेक्षण :

पूर्वकालिक अध्ययनों व शोधों का विश्लेषण करने पर कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आये हैं । जो प्रस्तुत शोध समस्या के चयन के लिए सहायक हैं । नवाचार एवं नवाचारिकता का अध्ययन वर्तमान शताब्दी के चौथे दशक से आरम्भ हुआ । इसका प्रसार एवं प्रचार कृषि, औषधि, वाणिज्य एवं औद्योगिक से होता हुआ, शिक्षा जगत में पहुंचा । शिक्षा जगत् में नवाचारिकता से सम्बन्धित प्रथम पुस्तक है । "इन्वोवेशन इन एजूकेशन" नवाचारिक प्रवृत्ति तीव्र सामाजिक परिवर्तन की स्थिति में एकमात्र ऐसा उपकरण है जो संतुलन बनाये रखने में आवश्यक है । ब्रास – 1942, लायन वरगर व क्राफेन आवर– 1957, सहुटक – 1961 ने नवाचारिकता पर सर्वेक्षण किया और पाया कि कम उम्र के लोगों में नवाचारिकता अधिक मात्रा में पायी जाती है । कैपलव – 1954, लोटज – 1965, सीम्पसन – 1969 तथा उल – 1970 में इसी प्रकार के अनुसंधान कार्य किये । नीरा– 1983, शैक्षिक नवाचार की राष्ट्रीय विकास में भूमिका का अध्ययन किया । पीटरसन – 1984 ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रशिक्षित अध्यापकों में नवाचारिकता की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है । स्टेडमन – 1984 ने पाया कि अध्यापकों की नवाचारिक प्रवृत्ति नवाचारिकता को प्रभावित करती है ।

भारतवर्ष में शशिकला सिन्हा ने 1953 में मुथैया ने 1960 में, सिंह और सिंह ने 1961 में, मोहन्नी ने 1973 में, शुक्ला ने 1977 में, सिंह और कुमार ने 1980 में तथा सुषमा जोशो ने 1988 में अलग–अलग जनसंख्या व वर्ग पर महत्वाकांक्षा स्तर का

अध्ययन किया, उपरोक्त अध्ययनों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय परिक्षेत्र के महाविद्यालय अध्यापकों को लेकर उनमें नवाचारिकता का अध्ययन तथा उनके अन्दर महत्वाकांक्षा स्तर और सृजनात्मक प्रवृत्ति व उसके बीच सम्बन्धों व प्रभाव का अध्ययन अभी तक नहीं किया जा सका । अतः प्रस्तुत अध्ययन हेतु समस्या का चयन अपने में सर्वथा मौलिक प्रयास है ।

शोध की सीमाएँ :

(1) प्रस्तुत अध्ययन में पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों को सम्मिलित किया गया है ।

(2) इस अध्ययन में पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के लिंग एवं आवासगत भेद के अनुसार नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है ।

(3) इस अध्ययन में उपर्युक्त अध्यापकों की महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मक प्रवृत्ति को समाहित किया गया है ।

न्यादर्श निर्धारण

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय के अध्यापकों में से नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों का चयन करके उनकी महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मक प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है । अतः पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय

के सभी अध्यापक प्रस्तुत शोध में जनसंख्या का निर्माण करते हैं परन्तु अध्ययन की सीमा एवं अध्यापकों की उपलब्धता को दृष्टि में रखते हुए यादृच्छिक रूप से सभी जनपदों में अध्ययनरत 500 अध्यापकों को चुना गया है । यह प्रतिदर्श सम्पूर्ण अध्यापकों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

शोध के उपकरण :

मनुष्य के व्यवहार एवं मानसिक विन्यास को वस्तुनिष्ठ रूप से मापना एक जटिल कार्य है, फिर भी इनका मापन मनोवैज्ञानिक विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से किया जा सकता है । प्रस्तुत अध्ययन में समस्या से सम्बन्धित समाधान के लिए निम्नलिखित मापनियों का प्रयोग किया गया ---

(1) नवाचारिक अध्यापक मापनी (पी.सी. शुक्ला)

(2) आकांक्षा स्तर संकेत परीक्षण आंसपरी (पी.सी. शुक्ला)

(3) नान बर्बल रेस्ट आफ क्रियेटिव थिंकिगं (वाकर मेंहदी)

शोध-विधि :

किसी भी शोध कार्य के अध्ययन में विधि का बड़ा महत्व है । ऐतिहासिक, प्रायोगिक एवं सर्वेक्षण विधि द्वारा वर्तमान में अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है । प्रस्तुत अध्ययन में मानवीकृत परीक्षणों द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करके नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों की पहचान तथा उनकी महत्वाकांक्षा स्तर पर

सृजनात्मकता प्रवृत्ति के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा । इन नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों ने लिंग भेद एवं आवासगत भेद के अनुसार सृजनात्मकता एवं महत्वाकांक्षा स्तर एवं उनके बीच तुलना भी की है ।

<u>प्रदत्तों का संकलन विश्लेषण एवं व्याख्या</u> :

सर्वेक्षण के द्वारा परीक्षणों के माध्यम से सम्बन्धित तथ्य संकलित किये गये । तत्पश्चात् सांख्यिकीय विधि से माध्य, मानक विचलन एवं सी.आर. मान ज्ञात करके विभिन्नता चरों के अनुसार तुलना करके नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों में महत्वाकांक्षा स्तर एवं उनकी सृजनात्मक प्रवृत्ति के बीच सम्बन्ध ज्ञात किया गया ।

पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय के 40 महाविद्यालयों के 500 अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में 68 नवाचारिक एवं 82 अनवाचारिक अध्यापक पाये गये ।

1. नवाचारिक अध्यापकों में 38 पुरुष एवं 30 महिलायें हैं ।
2. अनवाचारिक अध्यापकों में 40 पुरुष एवं 42 महिला अध्यापिकायें हैं ।
3. अध्यापकों की नवाचारिकता में लिंग भेद नहीं पाया गया ।
4. नवाचारिक अध्यापक अनवाचारिक अध्यापकों की तुलना में अधिक महत्वाकांक्षा का स्तर रखते हैं और अधिक महत्वाकांक्षी होते हैं ।
5. नवाचारिक अध्यापक (पुरुष) अनवाचारिक अध्यापक पुरुष से अधिक का महत्वाकांक्षा स्तर रखते हैं और वे अधिक महत्वाकांक्षी होते हैं ।

6. नवाचारिक अध्यापिकायें अनवाचारिक अध्यापिकाओं से अधिक महत्वाकांक्षा के स्तर का निर्धारण करती है तथा उनसे अधिक महत्वाकांक्षी होती है ।

7. नवाचारिक अध्यापक अनवाचारिक अध्यापकों की सृजनात्मकता में लिंग के आधार पर भिन्नता पायी गयी ।

8. अनवाचारिक अध्यापकों की सृजनात्मकता में आवास के आधार पर भिन्नता पायी गयी ।

9. नवाचारिक अध्यापकों की सृजनात्मकता में आवास के आधार पर भिन्नता पायी गयी ।

10. नवाचारिक अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के सृजनात्मकता एवं महत्वाकांक्षा के स्तर में कोई अन्तर नहीं है ।

11. अनवाचरिक अध्यापक, अनवाचारिक अध्यापिकाओं की सृजनात्मकता एवं महत्वाकांक्षा स्तर की तुलना में अधिक स्तर को रखते हैं ।

नवाचारिक अध्यापक के व्यक्तित्व का प्रभाव छात्रों के व्यक्तित्व, कृतित्व और सृजनात्मकता पर पड़ता है अथवा नहीं, इसके अध्ययन के लिए भी शोध किये जा सकते हैं ।

नवाचारिक अध्यापक के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा छात्रों की उपलब्धि के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है ।

अभिवृत्ति का सम्बन्ध व्यक्ति में क्रियात्मकता से है । अतः अध्ययन के माध्यम से यह भी दोखाजा सकता है । नवाचारिक अध्यापकों की व्यावसाय अभिवृत्ति तथा व्यावसायिक संतुष्टि में क्या सम्बन्ध है ?

नवाचारिक अध्यापकों का सृजनात्मकता से क्या सम्बन्ध है, उनमें किस मात्रा में सृजनात्मक शक्ति है तथा छात्र की सृजनात्मकता से उसका क्या सम्बन्ध है ? यह भी किसी शोध का उद्देश्य हो सकता है ।

नवाचारिकता पर अध्यापक के सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का क्या प्रभाव पड़ता है ? इस दिशा में भी शोध किये जा सकते हैं ।

महत्वाकांक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति के समायोजन, चिंता, तनाव आदि से भी रहता है । अतः एक अध्ययन इस प्रकार का भी किया जा सकता है, जिसमें अध्यापक के मानसिक स्वास्थ्य एवं महत्वाकांक्षा के स्तर एवं नवाचारिकता की प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।

-*******-